हमारे उपनिषद्

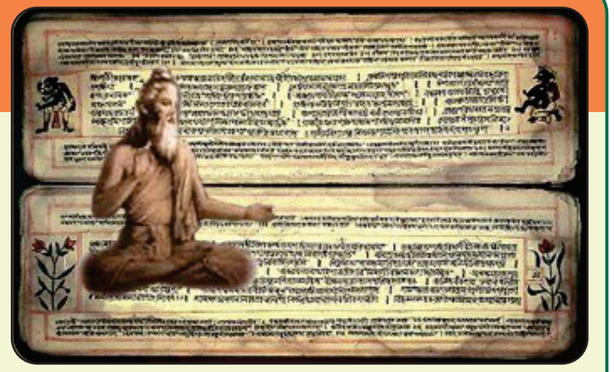

उपनिषद् समूचे भारतीय तत्त्व चिंतन का आधार है। आदिकाल से मानव के मन में सृष्टि के रहस्यों को जानने की जिज्ञासा का उत्तर ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में है। इन सूक्तों का स्पष्टता से विस्तारपूर्वक जहां समाधान किया गया है, वे ही उपनिषद् कहलाये। ऋषियों ने कितनी अनुभूति कर चिंतन द्वारा उस तत्वज्ञान को प्रकट किया गया होगा कि विश्व के अनेक मूर्धन्य चिन्तक उनको जानने की इच्छा से आकर्षित हुए। दाराशिकोह ने उनका फारसी भाषा में अनुवाद किया जिसको पढ़ द्रवीभूत हुए फ्रेंच लेखक दुपेरोन ने उसका लैटिन भाषा में अनुवाद किया जो सन १८०२ में स्ट्रासबर्ग प्रेस में छपा। लैटिनग्रन्थ ओपेनरवत् जब प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शोपेनहोवर ने पढ़ा तो उसके उद्गार थे – उपनिषद् मानव बुद्धि की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। ज्ञातव्य है कि उपनिषदों की श्रुतियां साक्षात् अनुभवजन्य होने से अतर्क्य मानी जाती है। इसमें सभी अतिमानवीय विचार हैं। साधारणतया कहा जाता है

हिन्दू धर्मशास्त्र

अपने धर्म ग्रंथों को जानें

जो तत्व या सत्य को अनुभव कर लेता है उसकी स्थिति गूंगे के खाए गुड़ की सी हो जाती है। 'ज्यों गूंगा मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावै' परन्तु भारतीय ऋषियों ने उस अतिउत्तम गोपनीय ज्ञान को भी जन साधारण को कहकर, शिष्यों को देकर जन सामान्य को उपलब्ध करा दिया। उपनिषदों की संख्या १०८ से लेकर २२० तक कही गई है। यूँ तो उपलब्ध सभी ज्ञान के स्रोत होने से महत्व के हैं। पर ग्यारह उपनिषद् प्रमुख हैं। जिन पर आद्य शंकर ने भाष्य लिखा है। ये उपनिषद् हैं- ईशोपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, तैत्तरीयोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् और श्वेताश्वतरोपनिषद्। इन उपनिषदों में जीव, जगत व परमात्मा का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। विज्ञान में एकत्व की खोज की तरह ही उपनिषदों में अंतिम एकत्व का प्रतिपादन किया गया है। ◆◆◆

भगिनी निवेदिता...

पृष्ठ ३ से...

वे उन सीधे लोगों पर अपने विचार तथा अपनी दृष्टि थोपते हैं। स्वामी विवेकानन्द अपने विदेशी शिष्यों के साथ ऐसा नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि उनके शिष्य भारत को उसी रूप में स्वीकार करें जैसा कि वह है, तथा भारत से सीखें।

एक गर्वीली और सम्पन्न ब्रिटिश महिला रही निवेदिता भारत से एकरूप कैसे हो पायी, उस कठोर प्रशिक्षण में कैसे खरी उतरी?

प्रथम, उनके पास खुला मस्तिष्क एवं सत्यनिष्ठा थी। वह सत्य की खोज में थी तथा भले ही वह एक ईसाई माता-पिता की संतान और एक गर्वीली ब्रिटिश नागरिक थी, फिर भी उन्होंने ब्रिटिश आधिपत्य वाले देश के एक हिन्दू से सत्य स्वीकार किया।

द्वितीय, उनके पास उद्देश्य के लिए सच्ची निष्ठा थी। एक बार यह अहसास होने पर कि वैदिक एकात्मता को जीवन में अनुभव करना चाहिए, उन्होंने इसके लिए स्वयं को अर्पित कर दिया। वे सचमुच बहादुर व साहसी थीं। इसलिए वे उस ईसाई प्रचार का शिकार नहीं हुईं जिसमें कहा गया था, 'एक बार ईसाई होने के बाद आप किसी और नाम से ईश्वर की प्रार्थना नहीं कर सकते क्योंकि जीजस के अतिरिक्त अन्य सारे देवता शैतान हैं। अगर आप ऐसा करते हैं तो आप नरक की आग में जलेंगे।'

तृतीय, भले ही राह कठिन थी, प्रशिक्षण कठिन था, पर उन्होंने इसे छोड़ने का विचार कभी भी नहीं किया। उनका 'अविचल रहने का मनोभाव' एवं आतंरिक धैर्य ने उन्हें कभी भी पथ पर संदेह करने की अनुमति नहीं दी। उन दिनों उनका स्वयं के प्रति एकमात्र प्रश्न था कि उस बात को समझने के लिए क्या किया जाए जो उनके स्वामी (गुरु) कहने का प्रयत्न कर रहे हैं।

चतुर्थ, सबसे महत्त्वपूर्ण बात। वह स्वामी विवेकानन्द के कारण भारत आईं, पर शनैः-शनैः निवेदिता के लिए सेवा का प्राथमिक कारण भारतमाता हो गईं। प्रारंभ में कोई व्यक्ति किसी अन्य से प्रेरित होकर कार्य करना चाह सकता है पर व्यक्तिगत आदर्श किसी को लम्बे समय तक प्रेरणा नहीं दे सकता। यह अवैयक्तिक आदर्श है जो प्रेरणा का चिरस्थायी स्रोत बन सकता है। निवेदिता उसकी तह तक गईं और यही कारण है कि उन्होंने भारत को अपना सर्वस्व दे दिया।

इस कठिन प्रशिक्षण से भगिनी निवेदिता भारतमाता की उत्साही सेविका के रूप में उभरीं। निवेदिता का यह सम्पूर्ण रूपांतरण मैकाले द्वारा शिक्षित भारतीयों के लिए महान उदाहरण है। अगर एक गर्वीली और सम्पन्न ब्रिटिश महिला अपने सभी पूर्वाग्रहों, भ्रांतियों तथा पाश्चात्य सोच को त्याग सकती हैं, एवं मिसाल दिए जाने योग्य बदलाव के साथ वह एक सच्ची भारतीय तथा भारतमाता की महान प्रशंसक, पुजारिन और सेविका बन सकती है तो हम क्यों नहीं? जब कोई मातृभूमि की सेवा करना चाहता है तो उसे अपनेआप को बदलना होगा जिससे वह ईश्वर के हाथ का सही साधन बन सके। इस प्रकार भगिनी निवेदिता उन सभी के लिए प्रेरणा हैं जो हमारे समाज की सेवा करना चाहते हैं। ◆◆◆

(क्रमशः)

बीज-२० :: अप्रैल, २०१८

ॐ धर्मबीज

dharmabeej@gmail.com

मल्होत्रा धर्मबीज दान द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रक

नया भारत निकल पड़े...

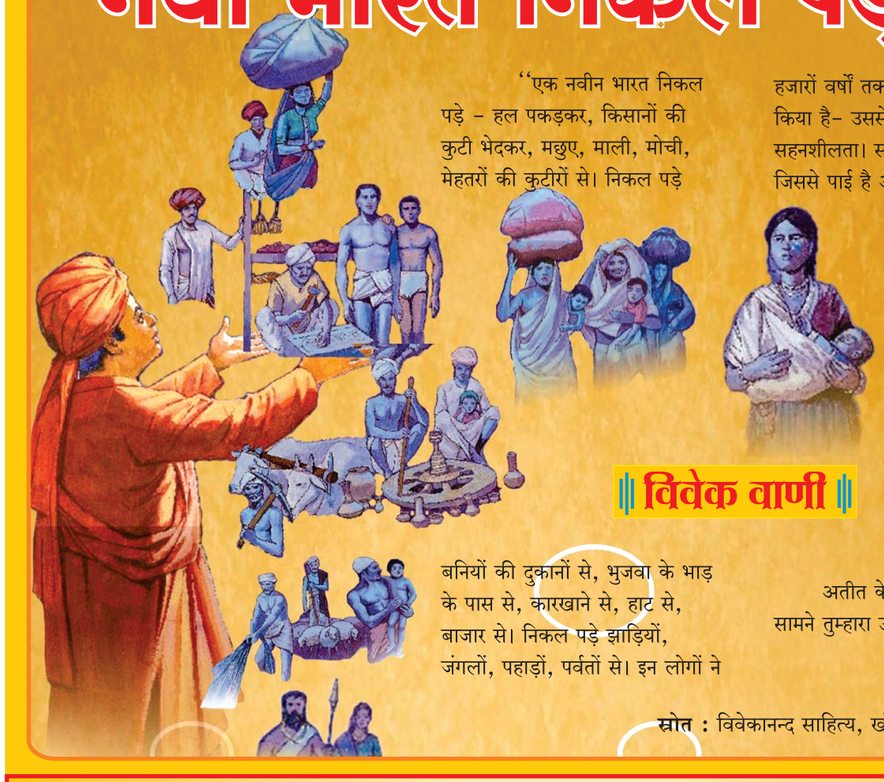

विवेक वाणी

''एक नवीन भारत निकल पड़े – हल पकड़कर, किसानों की कुटी भेदकर, मछुए, माली, मोची, मेहतरों की कुटीरों से। निकल पड़े बनियों की दुकानों से, भुजवा के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से। निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से। इन लोगों ने हजारों वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किया है- उससे पाई है अपूर्व सहनशीलता। सनातन दुःख उठाया, जिससे पाई है अटल जीवनशक्ति। ये लोग मुट्ठी भर सत्तू खाकर दुनिया को उलट सकेंगे। आधी रोटी मिली, तो तीनों लोक में इतना तेज न अटकेगा। ये रक्तबीज के प्राणों से युक्त हैं। और पाया है सदाचार-बल, जो तीनों लोक में नहीं है। इतनी शांति, इतनी प्रीति, मौन रहकर दिन-रात इतना खटना और काम के वक्त सिंह-विक्रम!

अतीत के कंकालों! यही है तुम्हारे सामने तुम्हारा उत्तराधिकारी भावी भारत।' ◆◆◆

- स्वामी विवेकानन्द

स्रोत : विवेकानन्द साहित्य, खंड-८, पृष्ठ संख्या - १६७

तैमूर को किसने हराया?

धर्मो रक्षित रक्षितः

हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे जातिवाद से ऊपर उठकर सोच ही नहीं सकते। यही पिछले १२०० वर्षों से हो रही उनकी हार का मुख्य कारण है। इतिहास में कुछ प्रेरणादायक घटनाएं मिलती है। जब जातिवाद से ऊपर उठकर हिन्दू समाज ने एकजुट होकर आक्रान्ताओं का न केवल सामना किया अपितु अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन्हें यमलोक भेज दिया। तैमूर लंग के नाम से सभी भारतीय परिचित हैं। तैमूर के अत्याचारों से हमारे देश की भूमि रक्तरंजित हो गई। उसके अत्याचारों की कोई सीमा नहीं थी।

तैमूर लंग ने मार्च सन् १३९८ ई. में भारत पर ९२,००० घुड़सवारों की

शेष पृष्ठ २ पर...

यह प्रश्नोत्तरी धर्मबीज के जनवरी माह के अंक पर आधारित है । सभी प्रश्नों के सहीं उत्तर देनेवाले पहले तीन प्रतिभागियों को ५०० रूपये मूल्य की पुस्तकें व स्वामी विवेकानन्द की एक प्रतिमा/चित्र पुरस्कार के रूप में दी जायेगी तथा उनके नाम और चित्र धर्मबीज के अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे । आप अपने नाम, पते और चित्र के साथ अपने उत्तर ईमेल द्वारा : dharmabeej@gmail.com को या धर्मबीज, विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी-६२१७०२ को भेज सकते हैं ।

धर्मबीज प्रश्नोत्तरी

१) किस महिला को सऊदी अरब की पहली योग प्रशिक्षक का दर्जा मिला है ?

२) श्री गुरु गोविन्द सिंहजी ने 'पंज प्यारे' कहकर जिन्हें सम्बोधित किया उनके नाम बताइए ।

३) अथर्ववेद की नौ शाखाओं के नाम बताइए?

४) मार्गरेट नोबल (भगिनी निवेदिता) की दीक्षा कब हुई, स्वामीजी ने उन्हें किसकी प्रतिमा भेंट की?

५) स्वामीजी के अनुसार, अपने देशवासियों में सहस्रों दोष दिखाई दें, पर हमें ध्यान रखना है कि...?

धर्मबीज प्रश्नोत्तरी - जनवरी, २०१८ अंक के सही उत्तर देने वाले विजेता

पंकज पुनिया
अजमेर, राजस्थान

विश्वा शर्मा
अजमेर, राजस्थान

सुरेश लामा
अजमेर, राजस्थान

धर्मबीज प्रश्नोत्तरी - जनवरी, २०१८ अंक की प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. शंघाई के एक महत्वपूर्ण सड़कों में से एक पर किस संस्कृत कवि की प्रतिमा का अनावरण किया गया?
उत्तर : महाकवि कालिदास

२. यजुर्वेद में सम्मिलित किन्हीं तीन उपनिषदों के नाम बताइए।
उत्तर : बृहदारण्यक उपनिषद्, ईशोपनिषद्, तैत्तरीयोपनिषद्, कठोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् तथा मैत्री उपनिषद्।

३. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, मार्गरेट नोबल (भगिनी निवेदिता) को भारत आने पर कौन सी चार समस्याओं का सामना करना था?
उत्तर : १ - भारत भीषण गर्मी वाला देश है और उनको यह बर्दाश्त करना होगा।
२ - यहां उन्हें यूरोपीय सुख नहीं मिलेगा और क्या वे इसके बिना रह सकेगी?
३ - अंग्रेज उनके भारतीयों के लिए काम करने को हल्के में नहीं लेंगे और क्या वे उनकी अप्रसन्नता के सम्मुख खड़ी हो पाएंगी?
४ - उनके ब्रिटिश नागरिक होने से भारतीय भी उनकी अच्छी भावना पर संदेह कर सकते हैं, क्या वे इसे बर्दाश्त कर पाएगी?

४. मावली माता किस जनजाति की देवी तथा बूढ़ा देव किस जनजाति के देवता हैं?
उत्तर : मावली माता हल्बा जनजाति की देवी है, बू देव गोंड़ जनजाति के देवता हैं।

५. कश्मीरी पंडितों के 'तिलक' और 'जनेऊ' की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने वाले सिख गुरु का नाम बताइए। ?
उत्तर : श्री गुरु तेग़बहादुर जी

◆◆◆

तैमूर को किसने हराया?

पृष्ठ ३ से...

सेना लेकर तूफानी आक्रमण कर दिया। तैमूर के सार्वजनिक कत्लेआम, लूट-खसोट और सर्वनाशी अत्याचारों की सूचना मिलने पर संवत् १४५५ (सन् १३९८ ई.) कार्तिक बदी ५ को देवपाल राजा (जिसका जन्म निरपड़ा गांव जिला मेरठ में एक जाट घराने में हुआ था) की अध्यक्षता में हरियाणा सर्वखाप पंचायत का अधिवेशन जिला मेरठ के गाँव टीकरी, निरपड़ा, दोगट और दाहा के मध्य जंगलों में हुआ। इस पंचायत में सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गए - १. सब गांवों को खाली कर दो। २. वृद्ध पुरुषों, स्त्रियों तथा बालकों को सुरक्षित स्थान पर रखो। ३. प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति सर्वखाप पंचायत की सेना में भर्ती हो जाएं। ४. युवतियाँ भी पुरुषों की भांति शस्त्र उठायें। ५. दिल्ली से हरिद्वार की ओर बढ़ती हुई तैमूर की सेना का छापामार युद्ध शैली से मुकाबला किया जाए तथा उनके पानी में विष मिला दो। ६. ५०० घुड़सवार युवक तैमूर की सेना की गतिविधियों को देखें, और पता लगाकर पंचायती सेना को सूचना देते रहें।

पंचायती सेना

पंचायती झण्डे के नीचे ८०,००० मल्ल योद्धा सैनिक और ४०,००० युवा-महिलायें शस्त्र लेकर एकत्र हो गए। इन वीरांगनाओं ने युद्ध के अतिरिक्त खाद्य सामग्री का प्रबन्ध भी सम्भाला। दिल्ली के सौ-सौ कोस चारों ओर के क्षेत्र के वीर योद्धा देश रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने रणभूमि में आ गये। सारे क्षेत्र में युवा तथा युवतियां सशस्त्र हो गए। इस सेना को एकत्र करने में धर्मपाल देव (जाट योद्धा) जिसकी आयु ९५ वर्ष की थी, ने बड़ा सहयोग दिया था। उसने घोड़े पर चढ़कर दिन-रात दूर-दूर तक जाकर नर-नारियों को उत्साहित करके इस सेना को एकत्र किया। उसने तथा उसके भाई करणपाल ने इस सेना के लिए अन्न, धन तथा वस्त्र आदि का प्रबन्ध किया।

प्रधान सेनापति, उप-प्रधान सेनापति, सेनापति तथा उप-सेनापति की नियुक्ति

सर्वखाप पंचायत के इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से वीर योद्धा जोगराज सिंह गुर्जर को प्रधान सेनापति बनाया गया। यह खूबड़ परमार वंश का योद्धा था जो हरिद्वार के पास एक गाँव कुंजा सुन्हटी का निवासी था। बाद में यह गाँव मुगलों ने उजाड़ दिया था। वीर जोगराज सिंह के वंशज उस गांव को छोड़कर लंढ़ोरा (जिला सहारनपुर) में आकर बस गए। जोगराज सिंह बाल ब्रह्मचारी एवं विख्यात पहलवान था। उसका कद ७ फुट, ९ इंच था।

महिलाएं वीरांगनाओं की सेनापति के रूप में रामप्यारी गुर्जर, हरदेई जाट, देवीकौर राजपूत, चन्द्रो ब्राह्मण तथा रामदेई त्यागी को चुना गया। वहीं उपप्रधान सेनापति के रूप में धूला भंगी (वाल्मीकि) और हरबीर गुलिया (जाट) को चुना गया। धूला भंगी जिला हिसार के हांसी गांव का निवासी था। यह महाबलवान, निर्भय योद्धा, गोरिल्ला (छापामार) युद्ध में माहिर योद्धा था। दूसरा उपप्रधान सेनापति हरबीर सिंह, जिसका गोत्र गुलिया था। वह हरियाणा के जिला रोहतक गांव बादली का रहने वाला था। उसकी आयु २२ वर्ष की थी। यह निडर एवं शक्तिशाली वीर योद्धा था।

इसी तरह गजेसिंह जाट गठवाला, तुहीराम राजपूत, मेदा रवा, सरजू ब्राह्मण, उमरा तगा (त्यागी) तथा दुर्जनपाल अहीर का सेनापति के रूप में निर्वाचन हुआ। वहीं कुन्दन जाट, धारी गड़रिया, भौन्दू सैनी, हुल्ला नाई, भाना जुलाहा, अमनसिंह पुंडीर राजपुत्र, नत्थू पार्डर राजपुत्र, दुल्ला (धाड़ी) जाट, मामचन्द गुर्जर तथा फलवा कहार को उप सेनापति बनाया गया। वहीं भिन्न-भिन्न जातियों के २० सहायक सेनापति चुने गए जबकि प्रचण्ड विद्वान् चन्द्रदत्त भट्ट (भाट) को वीर कवि नियुक्त किया गया जिसने तैमूर के साथ युद्धों की घटनाओं का आँखों देखा इतिहास लिखा था। (क्रमशः)

भगिनी निवेदिता : जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत पर न्यौछावर किया

हमने पूर्व के अंकों में देखा कि मार्गरेट नोबल हिन्दू धर्म में दीक्षित हुईं और उनके गुरु स्वामी विवेकानन्द ने उनका नाम निवेदिता रखा। परन्तु निवेदिता को भारत की सेवा करने योग्य बनने के लिए आवश्यक था भारत को जानना तथा उससे प्रेम करना। उनका कठिन और कठोर प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ।

निवेदिता का प्रशिक्षण

निवेदिता के हिन्दू धर्म अपनाने के बाद स्वामीजी रामकृष्ण मठ के कुछ साधुओं एवं निवेदिता तथा पश्चिम के अन्य शिष्यों के साथ तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। यह निवेदिता के लिए भारत को समझने की तीर्थयात्रा थी। भारत की छिपी हुई शक्ति एवं सुन्दरता तथा उसकी संस्कृति में स्वामीजी को इतना प्रबल विश्वास था कि दासता एवं पतन के उन दिनों में भी उन्होंने अपने विदेशी शिष्यों को भारत को देखने और समझने के लिए यात्रा में अपने साथ ले जाने का साहस किया।

इंग्लैंड में रहते हुए निवेदिता ने सोचा था कि अंग्रेजी कानून भारत के लिए लाभदायक था। उनकी इसी पश्चिमी प्रवृत्ति जो कि बड़ी मुश्किल से छूटने वाली थी, उसको जड़ से समाप्त करने के लिए स्वामीजी ने कठोरतापूर्वक उनके इसी पूर्वाग्रही विचार पर प्रहार प्रारंभ किया। उन दिनों एक सन्दर्भ में निवेदिता ने स्वामीजी से कहा, लन्दन शहर को सुन्दर बनाना आवश्यक है। स्वामीजी ने पलटकर जबाब दिया, और उसके लिए तुम अन्य शहरों को कब्र में डाल रही हो। स्वामीजी के इन शब्दों के अर्थ को निवेदिता ठीक से समझ न सकीं और वह आहत हो गईं। पर ये शब्द उनके कानों में कई दिनों तक गूंजते रहे।

स्वामीजी अधकचरे ज्ञान के अंधत्व एवं अज्ञानता से जन्मे पूर्वाग्रह को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन्होंने कभी किसी विचार के लिए औरों पर दबाव नहीं डाला और न ही किसी विश्वास के प्रति स्वीकारोक्ति के लिए आह्वान किया। पर जब उनके शिष्य निष्पक्ष बात नहीं रख सके तो उन्होंने कहा, वास्तव में तुम्हारी जैसी देशभक्ति पाप है... इस प्रकार की अज्ञानता के प्रति इतनी दृढ़ता दुष्टता ही है।

इसी संघर्ष में कई दिन बीत गए और इससे आंतरिक कलह बढ़ गया। यह निश्चित रूप से दो प्रबल व्यक्तित्वों का द्वंद्व था। स्वामीजी अपने विचारों से समझौता करने वाले व्यक्ति नहीं थे, यहाँ तक कि सिखाने के मामले में भी वे बहुत सख्त थे; वहीं निवेदिता का स्वभाव भी ऐसा नहीं था कि किसी की बात को बिना सोचे-समझे, आँख मूंदकर स्वीकार कर ले। पर स्वामीजी से दूर जाने के बारे उसने कभी सोचा नहीं और न ही स्वामीजी के प्रति उनका विश्वास कभी डगमगाया।

स्वामीजी चाहते थे कि वह (निवेदिता) अपनी खोज करे, अपने अंतस की गहराई में उतरे और स्वयं को उस अद्वितीय को समर्पित कर दे। यह मात्र वैसी गहराई थी जो समस्त भिन्नताओं में ऐक्य देखने की दृष्टि दे सकती थी जो भारत और उसके निवासियों को समझने में सहायक होती। स्वामीजी ने स्वामी स्वरूपानन्द को कहा कि वो निवेदिता को बांग्ला, हिन्दू ग्रन्थ एवं ध्यान सिखाएं। वह (निवेदिता) गीता के अध्ययन तथा ध्यान के अभ्यास से लाभान्वित हुईं परन्तु उनके अन्दर यह चिंता बनी रही कि वे उस बात को कैसे समझ सकें जो उनके गुरु सिखाना चाह रहे हैं।'

जब सभी अल्मोड़ा में थे तब उस समूह की सबसे वृद्ध महिला श्रीमती बुल ने स्वामीजी को निवेदिता के आतंरिक द्वंद्व के बारे में बताया। स्वामीजी ने सुना और उत्तर दिए बिना ध्यान के लिए वन में चले गए। वे कई दिनों के बाद लौटे और निवेदिता को आशीर्वाद दिया। वह (निवेदिता) इसके बारे में लिखती हैं, ध्यान की अवस्था में, अकेले में मैंने स्वयं को एक अनंत उत्तम की ओर टकटकी लगाए पाया, जिसका अनुभव मुझे किसी अहंकारी तर्क ने नहीं करवाया। ...और मैंने पहली बार समझा कि महान गुरु अवैयक्तिक दृष्टि प्रदान करने के लिए हमारे अन्दर के वैयक्तिक संबंधों को नष्ट कर देते हैं।

धर्मकथा

निवेदिता औपनिषदीय ज्ञान एवं भारत-भक्ति की अवैयक्तिक दृष्टि की तह में जितना गई उतना ही उन्होंने समझा कि उनके गुरु उन दिनों उन्हें क्या समझाना चाह रहे थे। तीर्थाटन के दौरान उन्होंने देखा कि ब्रिटिश तीर्थयात्री भारतीय मजदूरों के साथ कैसा व्यवहार करते थे। उन्हें धक्का लगा कि स्वामीजी को मिलने वाले पत्र खुले होते थे और ब्रिटिश उनकी जासूसी करा रहे थे। कश्मीर के महाराजा द्वारा भूमि और भवन दिए जाने का पक्का वादा किये जाने के बावजूद ब्रिटिशों ने स्वामीजी को कश्मीर में संस्कृत कॉलेज खोलने की अनुमति नहीं दी। इस प्रकार जब निवेदिता प्रशासन के नाम पर ब्रिटिश द्वारा भारत के शोषण की साक्षी बनी तब वे स्वामीजी के शब्दों की सच्चाई को समझ पायीं।

निवेदिता भारत के लोगों एवं उनकी आकांक्षाओं के साथ इस प्रकार एक हो गईं कि उनका जीवन, उनके कार्य, उनके शब्द उसी एकता को प्रतिबिंबित करते थे जिसका अनुभव उन्होंने किया था। वो हमेशा हमारे लोग, हमारा देश कहा करती थीं। हम अक्सर देखते हैं कि जो लोग गाँवों में या जनजाति क्षेत्रों में उन लोगों को 'सभ्य बनाने' या उनका 'विकास करने' हेतु जन सेवा के लिए जाते हैं, वे 'ऐसा समाज' या 'ऐसे लोग' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। **शेष पृष्ठ २ पर...**